अलीबख्श ख्यालों में लोक तत्त्व

✧ डॉ. कृष्णबीर सिंह

ग्रामीण परिवेश में रहने वाले जनसाधारण लोक की संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं एवं इन ग्रामीणों की विभिन्न क्रिया कलापों का इन्हीं की भाषा शैली में किया गया वर्णन लोक साहित्य कहलाता है। लोक साहित्य में उस स्थान विशेष अथवा एक परिधि के अन्तर्गत आने वाले स्थानों, जनसमूहों जिसमें विभिन्न जाति धर्म आदि सम्मिलित हैं, के उद्‌गार लिखित अथवा मौखिक रूप से हमें लोक साहित्य में सुनने अथवा पढ़ने को प्राप्त होते हैं।

लोक साहित्य का उद्‌गम मनुष्य की प्रथम सभ्यता के साथ ही प्रारम्भ हो चुका था। अधिकतर लोक साहित्य, लोक गीतों, लोक कथाओं, किस्सों, नाटकों आदि रूपों में निरन्तर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्वत: ही हस्तान्तरित होते रहते हैं। बदलती मानव मानसिकता के कारण लोक साहित्य में अनेकों संशोधन या एक ही कथानक, गीत, नाटक, नृत्य आदि के विभिन्न रूप हमें देखने को मिल जाते हैं। दूसरा इसका कारण यह भी है कि यह धरोहर व्यक्ति से व्यक्ति को मौखिक रूप से हस्तान्तरित होती है और केवल अभ्यास के द्वारा स्मरण कर ली जाती है। दूसरे, व्यक्ति की भाषा व अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक प्रभाव के कारण अनायास ही स्वयं की कल्पना शक्ति द्वारा परिवर्तित हो जाती है। समाज में बहुत सा ऐसा लोक साहित्य प्रत्येक वर्ग, जाति, धर्म का उपलब्ध है जिसके रचयिता आदि की जानकारी उपलब्ध नहीं है।

लोक साहित्य हमारे समाज की एक ऐसी धरोहर है जिसमें उस क्षेत्र की समस्त भौगोलिकता का वर्णन, समाज का वर्णन, देवी-देवताओं का वर्णन, राजा प्रजा का वर्णन व अन्य सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, यौद्धा, वीरांगनाएँ, खेत-खलिहान, प्रेम कथाएँ, मैत्री आदि की सहज ही जानकारी प्राप्त हो जाती है।[1] लोक संस्कृति की धरोहर के रूप में विवाह गीत, जन्मोत्सव गीत, मृत्यु गीत, लोरियाँ, कुएँ से पानी निकालने, खेतों में पानी देते समय, फसल काटते समय, अनेकों त्यौहारों और उत्सवों पर गाये जाने वाले गीत, पहेलियाँ, समस्याएँ, व्रत-उपवास के गीत एवं कथाएँ समाज के स्त्री-पुरुषों के पास सुरक्षित है। कुछ गीत जाति विशेष में प्रचलित हैं।

लोक साहित्य में समाज का सम्पूर्ण सामाजिक विवरण जैसे भाई-बहिन, माता-पुत्री, माता-पुत्र, ननद-भाभी, पति-पत्नी, भगवान-सेवक, राजा-प्रजा आदि के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी मिल जाती है। निष्कर्षत: लोक साहित्य में सम्पूर्ण समाज की सामाजिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक स्थिति के विषय में बहुमूल्य जानकारी सुरक्षित रहती है जो समाज में व्यक्ति को नैतिक शिक्षक व शिक्षा के रूप में सामने लाती है।

अलीबख्श के ख्यालों में लोक व समाज के प्रत्येक पहलू पर बहुत ही कुशाग्रता के साथ प्रकाश डालने की कोशिश की गई है। अलीबख्श ने हिन्दू व मुस्लिम तथा समाज की छत्तीसों कोम व उनकी क्रिया-कलाप आदि का अपने ख्यालों में बहुत ही रोचकता से वर्णन किया है। अलीबख्श के ख्यालों में परिवार व परिवार के विभिन्न लोगों जैसे पिता-माता, भाई-बहिन, बेटा-बेटी, सास-बहू, ननद, जेठ-जेठाणी, पति-पत्नी, सपत्नियाँ, व्यवसाय, धर्म, जाति, बालक-वृद्ध, स्त्रियाँ, साधु-संन्यासी, वस्त्राभूषण, खेल-कूद, दान, जप-तप, अन्धविश्वास, ज्योतिष आदि का विस्तृत रूप से वर्णन मिलता है।

स्त्रियों की वेशभूषा के विषय में बहुत ही मार्मिक वर्णन प्रस्तुत है यथा-

अब मैं भी फिदा हूँ सो जो तू है आशिक मेरी। चित मेरे में चुभी तेरे आँचल की कौर सुनहरी।।[2]

इसमें नायक नायिका के सुन्दर व आकर्षित आंचल को ही अपना दिल दे बैठता है और वह मन ही मन यह कल्पना कर डालता है कि जब यह आंचल इतना सुन्दर एवं आकर्षक है तो नायिका का मुखड़ा कैसा होगा। अर्थात् निश्चित रूप से उसके मुख मण्डल की शोभा सर्वथा अद्वितीय होगी।

हमारे देश में सास-बहु, सास-ननद या भावज-ननद के सम्बन्धों में अनायास ही कटुता या व्यंग्य की तीक्ष्णता आदि देखने व सुनने को मिलती है। ये नाते बहुत ही कोमल व संवेदनशील होते हैं और यह मान्यता, धारणा है कि सास-बहु, ननद आदि का परस्पर सदैव वैचारिक मतभेद रहता है। इन तीनों का सामंजस्य नहीं हो सकता। शायद इसलिए अलीबख्श ने समाज को उक्त संदेश देकर यह बताने का प्रयास किया है कि हमें एक दूसरे का सम्मान, भावनाओं, इच्छाओं का सदैव ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि प्रत्येक प्राणी के घर में ईश्वर का निवास होता है, यदि आप दूसरे का सम्मान करेंगे तो ईश्वर आपको सम्मानीय स्थिति में अवश्य ही पहुँचा देगा।

नणद रखै भावज को मान तो इनको रखै श्री भगवान।[3]

इसी भाँति सास बहू के विषय में अलीबख्श ने अपने ख्यालों में काफी विस्तृत रूप से वर्णन किया है।

सास ननद द्वारा प्रताड़ित बहू की मनोदशा का वर्णन उक्त पद में देखने को मिलता है। यथा-

''मैं सिर दै दै कर मारती सासु को दया ना आवै, ये पीठ फेर कर हसैं रात-दिन बेटा नै बहैकावै।
ये सासड़ मेरी जन्म की बैरण नागन नणद डसै है, जिस घर में नारद सी नणदी वो सुबस नहीं बसै है।
या नणद नदिदी देखलौ मौकु गूँठा खड़ी दिखावै, या आते ही उधलण लगी जलती को और जलावै।।''[4]

विभागाध्यक्ष हिन्दी साहित्य, एस.एस.जी. पारीक (पी.जी.) कॉलेज, जयपुर

इन पंक्तियों के भावों में अलीबख्श की सामाजिक संवेदनाओं का पता चलता है और यह भी स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है कि समाज में रहते हुए लोक मर्यादाओं को निभाते हुए इस प्रकार ईश भक्ति करना और इस शक्ति के अजस्र स्रोत को अपने ख्यालों से चिरजीवी बनाये रखना लोक कलाकारों के लिए कितना चुनौतीपूर्ण कार्य था।

यों तो सास, बहू को पुत्री तुल्य एवं बहू, सास को जननी तुल्य मानने की बात समाज में प्रचलित है किन्तु व्यवहारिक तौर से इन सम्बन्धों में निरन्तर कलह की स्थिति बनी रहती है। लोक गीतों, लोक कथाओं में इन सम्बन्धों का खूब वर्णन व एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते हुए दिखाई देते हैं। माता की यह मानसिकता कि उसने जिस पुत्र को अनेकों कष्ट झेलने के पश्चात् पाल-पोश कर बड़ा किया इस बहू ने उसके जीवन की धरोहर को एक पल में उससे छीन लिया। सास को यद्यपि अपने युवा पुत्र हेतु बहू की आवश्यकता महसूस होती है किन्तु वह बहू की उपस्थिति सहन नहीं कर पाती। गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरित मानस के बालकाण्ड में भी बहू का सबसे बड़ा धर्म सास-ससुर का सम्मान व उनके चरणों की सेवा बताया है।

लेकिन वृद्धों एवं युवतियों में परस्पर मेल की कमी दिखाई देती है। अक्सर प्रारम्भ में बहुत-सी बहुएँ अपने सास-ससुर व अन्य परिवार के सदस्यों के साथ समन्वय स्थापित करने की चेष्टा करती है किन्तु सास द्वारा झूठे बर्तनों के ढेर, सारे परिवार के मैले कुचैले वस्त्रों को धोने की जिम्मेदारी, झाड़ू-पौंछा, खाना बनाने आदि का दायित्व मात्र बहू के कंधों पर डाल दिया जाता है और उसके बाद कभी फुहड़, बेवकूफ, गंवार, निर्लज आदि शब्दों से सम्बोधित कर डांटा फटकारा जाता है। लेकिन फिर भी अलीबख्श के ख्यालों में वर्णित बहू की मनोस्थिति कुछ इस प्रकार की है कि उसमें पूर्णरूपेण एक भारतीय नारी के दर्शन होते हैं। यथा–

''मैं बुरी बहू हूँ सासड़ तेरी शीश चरण में गेरी। जितने लिजे मार मुझे अब जूती लेकर मेरी॥''

किन्तु सास का बहू के प्रति संघर्ष ढीला नहीं पड़ता और वह बहू के प्रति कटुवचनों का प्रयोग करने में बिल्कुल हिचकिचाती नहीं। बहू के माता-पिता, भाई या अन्य रिश्तेदारों के द्वारा किया गया कार्य व्यवहार या उनके समस्त दोषों को बहू के माथे मढ़ दिया जाता है या फिर बहू के माता-पिता पर लांछन आदि लगा बहू के धैर्य की सीमा तोड़ दी जाती है। उदाहरण–

तुम इँसाँ घर की ब्याही आई हँस रहा सब संसार। ये पाप उदय हुआ मेरा सो मेरा हुवा बुढ़ापा धिक्कार॥[5]

बहू प्रत्यक्ष रूप से सास का तिरस्कार नहीं कर पाती और वह अपने पति को एक सीमा तक कुछ भी बताते हुए कतराती है कि कहीं उसका पति भी अन्य परिवार वालों के मतानुसार न सोच ले। वैसे बहू की यह मानसिकता दृष्टव्य है–

''सास नणद ससुराल में चाहे कैसी बैरण होय, जै पितम का प्यार मिलै तो बोल सकै ना कोय।
बोलण पावै नहीं चाहे सास नणद हो नागण, बेसक पुकारो रात-दिन वो सास मंडू कागण॥''[6]

अत: अलीबख्श के ख्यालों में सास-बहू का विस्तृत वर्णन देखने को मिलता है।

ननद परिवार का एक ऐसा पात्र है जिसका मुख सदैव कड़ुवा, सासों में काले साँप की सी फुँकार, आँखों में तीक्ष्ण बिजली की चमक समाई होती है। अपशब्दों का प्रयोग भाभी के प्रति करना, अपमानित करना, गाली आदि देना, ननद का जैसे अधिकार होता है। परिवार के सदस्यों में बहू के लिए गलत भ्राँतियाँ उत्पन्न करना ननद का सर्वोपरि कार्य होता है। वह अक्सर कटुक्तियों का प्रयोग करती रहती है यथा–

''उधले तेरी बहण भतिजी तेरे कटै बाप की नाक
तो मोसे कंकालण मत लड़ै तेरी कढ़वा लूगी आँख।
जो बीर मेरा सुण पायेगा तो तुझे देगा सूली टाँक॥''[7]

लेकिन अलीबख्श के ख्याल में वर्णित बहू का हृदय ननद के प्रति पसीज एवं पिघल जाता है लेकिन वह ननद के समस्त कटु वचनों को भूल यह कह उठती है। यथा–

''तेरा बुरा बोल गयी भूल मेरी नणदल निपट निमाणी। तेरी कोली भरलूँ प्यार सै सो तेरे ताने भूल बखाणी॥''[8]

निष्कर्षत: समाज के इन कोमल रिश्तों को निभाने व गुण-दोष आदि की जानकारी अलीबख्श ने साधारणजन तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है।

अलीबख्श के ख्यालों में सपत्नियों के विषय में विभिन्न पहलू उभर कर सामने आये हैं। कहावत है कि सौत मिट्टी की भी बुरी होती है। हमारे लोक जीवन में सोतिया डाह के अनेक ज्वलन्त उदाहरण मिलते हैं क्योंकि भारतीय नारी बड़े से बड़ा कष्ट वहन कर सकती है किन्तु सौत की उपस्थिति सहन नहीं कर पाती। यही भारतीय संस्कृति व भारतीय नारी की विशेषता है। विभिन्न प्रदेश के लोक साहित्य में सौत के विषय में व्याख्या मिलती है लेकिन पहले राजा महाराजा या अन्य सक्षम लोग बहुविवाह कर लिया करते थे। अलीबख्श के ख्यालों में सौतन के विषय में मार्मिक व पठनीय वर्णन मिलता है। पद्मावत का चित्तौड़गढ़ आगमन पश्चात् नागमती की भारतीय मानसिकता की छाप अनायास ही दृष्टिगोचर हो जाती है। यथा–

''कै प्रितम मन भावती सै मत मेरी छाँती फूँक, तू नेक नहीं सरमावती सै है बात कही दो टूक।
बड़ी बहो दीपा बनके बैठी तेरा जन्म मैं थूक॥ तू सनमुख सेल बगावती सै, है बड़ी माजणा चूक॥''[9]

सौत का दूसरी सौत को कौंसना या आपस में तीखी नौंक झौंक पर उतारु हो जाना एक सामान्य व मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। हमारे समाज में भाई बहिन के अक्षुण्य स्नेह को लोक साहित्य में सर्वोपरी स्थान प्राप्त है। बहिन की शादी होने के पश्चात् भी

भाई का स्नेह कम नहीं होता बल्कि उसका दायित्व और बढ़ जाता है। वहीं बहिना भी सदैव भाई के प्रति अपना प्रेम सतत् बनाये रखती है। वस्तुत: भाई बहिन का प्रेम आदर्श स्वरूप कहा जा सकता है।

ससुराल में बहिन अपने भाई की कुशल क्षेम के लिए व्रत एवं मन्नतें माँगती है तथा सदैव उसकी कुशलता के समाचार पाने को लालायित रहती है। नल-दमयन्ति ख्याल में अलीबख्श ने इसका मार्मिक वर्णन किया है। बहिना अपने भाई व भाभी पर आयी विपत्ति से दुखी होती है एवं अपने असहायपन का वर्णन करती है। यथा-

''भावज भाई की व्यथा सुन मेरा काँपे सकल शरीर। हाय मने जाने नहीं मेरा घर से उठ गया सीर॥
अब ऐसा ब्यौरा सुण बीरण का क्यों जीवै माँ जायी, मैं सुख भुगतूं बीरण विपदाधिक जीवन जग माई।
चन्दर बीरण पर बल जाये बिन बीर जीया ना जाई॥''[10]

इस प्रकार भाई-बहिन के प्यार का चित्र अलीबख्श के ख्यालों में उभर कर सामने आता है। अलीबख्श के ख्यालों में माता-पुत्र व माता-पुत्री के सम्बन्धों की चर्चा बहुत ही विस्तार से मिलती है। रत्नसेन सिंहलद्वीप जाने के लिए तैयारी करता है। माता को यह समाचार प्राप्त होता है तो वह बहुत ही दु:खी हो जाती है और अपना अधिकार व्यक्त करते हुए राजा रत्नसेन को चेतावनी देती हुई आदेश देती है कि साधु का वेश धारण करना उसके लिए शोभा का काम नहीं है। यदि वह माता की बात नहीं मानेगा तो माता के थप्पड़ों का शिकार होना पड़ेगा। अपने कुल व मर्यादा का वास्ता देते हुए माता कहती है। यथा-

अरे ऐसी बाँता तू करे सो ना किनी दादा बाप, जै अगर तगर तू करेगा तेरे दो मारूँगी थाप।
भेष जोगिया छोड़ कै जाय गद्दी बैठो आप॥[11]

लेकिन पुत्र की जिद के समक्ष माता को विनम्र होते देखा गया है। जबकि पुत्री के साथ उसका व्यवहार पुत्र की तुलना में कम आत्मीयतापूर्ण व कोमल होता है। क्योंकि लोक लाज की शिक्षा देने वाला पहला शिक्षक माता होती है इसलिए पुत्री की उच्छृंखलता पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु माता को ऐसा व्यवहार करना पड़ता है।

अलीबख्श के ख्यालों में जिस अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक सम्बन्ध का उल्लेख मिलता है वह पति-पत्नी सम्बन्ध है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार पति-पत्नी का सम्बन्ध जन्म-जन्मान्तरों का होता है। अलीबख्श ख्याल में पति-पत्नी का पवित्र सम्बन्ध बड़े विस्तृत एवं स्पष्ट ढंग से चित्रित हुआ है। पति-पत्नी के बीच जहाँ एक ओर प्यार की अनुभूति होती है वहीं पति-पत्नी के बीच कटु सम्बन्धों का उल्लेख भी मिलता है। नल-दमयन्ति ख्याल में पति-पत्नी का भारतीय रूप स्पष्ट रूप से चित्रित हुआ है क्योंकि विपत्ति आने पर नल व दमयन्ति एक-दूसरे की बैशाखी बन सहारा प्रदान करते हुए प्रतीत होते हैं। कुछ समय पूर्व जो स्त्री राजा नल की रानी के रूप में प्रतिष्ठित थी आज वह सहर्ष अपने पति के साथ ठोकरें खा रही है किन्तु दमयन्ति अपने पति का साथ छोड़ती नहीं है और जब राजा नल हतोत्साहित होते प्रतीत होते हैं तो दमयन्ति पत्नी धर्म का पूर्णरूपेण निर्वाह करती है। कहावत है-''अच्छा मित्र व अच्छी पत्नी भाग्यशाली पुरुष को प्राप्त होते हैं।''

''राजा जी छोड़ो मति हम दु:खयारी नार। ये बिपता भगवन ने दीनी वो ही नाव लगाये पार॥''[12]

लेकिन जो स्त्री दु:ख के क्षणों में पति का एकमात्र सहारा होती है। उसी पत्नी को पति द्वारा अपमानित व प्रताड़ित होने के उदाहरण अलीबख्श के ख्यालों में देखने को मिलते हैं। राजा नल पर ऋतुपर्ण की पत्नी द्वारा हार चुराने का दोषारोपण करने के अपराध में ऋतुपर्ण अपनी पत्नी को छोड़ देता है एवं उसे प्रताड़ित करता है। अलीबख्श के ख्यालों में तत्कालीन वेश-भूषा, आभूषण व अन्य गतिविधियों की जानकारी मिलती है। कान्हा का बाल रूप और उसका पट-पिताम्बर, काली कामरिया व मुरली का मनमोहक वर्णन अलीबख्श ने अपने ख्याल में किया है। स्त्रियों के वस्त्र, शृंगार आदि का विस्तृत वर्णन भी इनके ख्यालों में देखने को मिलता है।

स्त्रियों के आभूषणों में चूड़ी, पहौंची, कंगन, आरसी, पायल, बाजूबन्ध, हार, माला, कड़ा, चूड़ा, हसली, कर्णफूल, बेसर, नथ, शीशफूल, मेहन्दी, बिन्दी व पान की लाली आदि का वर्णन अलीबख्श के विभिन्न ख्यालों में मिलता है। वहीं चौसर, आँख मिचौनी, गिल्ली-डण्डा, चकरी, लट्टू आदि खेलों की व्याख्या भी इनके ख्यालों में हुई है।

प्रस्तुत राधा कृष्ण संवाद में कृष्ण द्वारा राधा को चकरी व लट्टू चलाने की कला सीखाने का स्वाभाविक वर्णन है। वहीं राधा भी आँख-मिचौनी खेल में पारंगत है। यथा-

''लेकर डोर हाथ में, चकरी क्यों ना आज फिरावै, नये नये खेल खिलाऊँ तोकू नेक मती शरमावै।
लट्टू डोर हाथ में ले ले किसलिए देर लगावै॥''
''आँख मिचौनी खेल में हारे सो सो बार। क्या चतराई करत हो खुश हो बारम्बार॥''[13]

इस प्रकार अलीबख्श का बाल वर्णन सहज किन्तु चमत्कारिक दिखाई देता है।

अलीबख्श के ख्यालों में सामाजिक परम्परा रीति व अन्य परिपाटियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इनके ख्यालों में जहाँ एक ओर ज्योतिष, व्रत, तीर्थ, तप, दान, धर्म, ईश्वर, खेल-कूद आदि की जानकारी प्राप्त होती है वहीं इनके ख्यालों में तंत्र-मंत्र व अन्य अन्ध-विश्वासों का आविर्भाव भी हुआ है। सांस्कृतिक परम्पराओं व रीति-रिवाजों का सरल एवं सहज रूप से बखान करना अलीबख्श की पारंगतता का परिचायक है।

शादी विवाह के अवसर पर स्त्रियाँ व्यंग्य विनोद भरे गीत गाती है। जिनमें शिष्टता व मर्यादा का उल्लंघन स्पष्ट रूप से हो जाता है किन्तु ऐसे माहौल में उक्त अमर्यादित गीत कर्णप्रिय लगते हैं जिन्हें 'सीठणा' की संज्ञा से परिभाषित किया गया है। कहीं कहीं तो दूल्हा पक्ष के अथवा भातई आदि स्वेच्छा से सीठणे सुनने की इच्छा व्यक्त करते हैं। यथा–

''चन्दर की सासु सोख ऊधली जाने लियो है जगत जस खूब कि छत्तीसों जातों पास होई खसम किया संसार।
घर में भटियारे के घुस गई उसे बणाया यार, भजडू भंगी लेकर भागा आधी के मझधार।
घर वालों ने गैल न किनी आई मजे की तार॥''[14]

नल-दमयन्ति ख्याल में चन्दर बाई की पुत्री चम्पा का विवाह निश्चित हो जाने पर माँ को चिन्ता होती है कि उसकी पुत्री की शादी पर भात कौन भरेगा? क्योंकि उसके भाई नल को राजगद्दी से पदच्युत कर दिया गया था। ऐसी स्थिति में यदि भात रस्म पूर्ण नहीं हुई तो समाज के लोग उस पर छींटा कसी करेंगे। वह ईश्वर से प्रार्थना करती है और पूछती है कि अब किस विध मेरे दु:खों का अन्त होगा। यथा–

''अब होवै निर्वाह कौन विध रोवत हूँ, दुखयारी, तू नरवर गढ़ में हैं नहीं मैं कहाँ नोतूं भात मेरे भाई।
फेरा फेरना होय मेरे घर एक अकेली बाई, जै नहीं पहुँचे भात हंसेंगे लोग लुगाई।
नरवर गढ़ में नल नहीं और बाई के घर ब्याह, विधना विधवा कि कौन विध तो अब होवै निर्वाह॥''[15]

अलीबख्श के ख्याल में मित्रता, भ्रातृत्व, अतिथि सत्कार, ग्राम परिवेश की झाँकी जिसमें दूध दोहने का वर्णन, पनघट से पानी लाने का वर्णन, पेड़-पौधों, नदी पहाड़ों का वर्णन, घर मौहल्ले की जानकारी व अन्य-नेजू (रस्सी) डोढी, सांकल, ईंढी, मथनियां (बिलौना), छींका आदि का वर्णन प्रचुर मात्रा में मिलता है।

इनके ख्यालों में निर्गुण व सगुण दोनों प्रकार की भक्ति के दर्शन होते हैं। अलीबख्श के ख्यालों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हिन्दू व मुस्लिम दोनों धर्मों के देवताओं की आराधना अपने ख्यालों में की है। वैसे मुख्य रूप से शिवशंकर भगवान, मंशा देवी, हनुमान जी, गणेश जी व श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित कर सहायता की विनती की है। वहीं मुस्लिम सम्प्रदाय के पीर पैगम्बरों से भी सहायता की प्रार्थना की है।

अलीबख्श के ख्यालों में हमें सांसारिक मोह-माया, विषय-वासना के प्रति अनुराग न करने व ईश्वर के प्रति ध्यान लगाने का सन्देश मिलता है। भाव इस प्रकार व्यक्त किये गये हैं कि श्रोता आत्म-मंथन के लिए प्रेरित हो जाता है। यथा–

''हमारे दया धर्म दिल में नहीं पाँव पड़ रही पाप रसरिया अलीबख्श हरि हित ना किन्यौ सिर पै धरै डोलै पाप गठरिया
काम क्रोध मद लोभ मोह से नाहक नेह लगावत हो कहे अलीबख्श तू भज भगवान को क्यों बेकार उमर गँवावत हो॥''[16]

सूफी कवियों की भाँति अलीबख्श ने भी प्रेमाश्रय को रहस्यवादी ढंग से नायक नायिका के रूप में भक्ति भावना को प्रश्रय दिया है। जिसमें उनके हिन्दू अद्वैतवाद की छाप के साथ-साथ ही मुस्लिम प्रेमाश्रय की भी स्पष्ट छाप दिखाई देती है। जैसे–

''सखी साँवरे बिन नींद न आवै, जिया तरस-तरस रह जाये
मन मेरा मरम न जाने-पिहु-पिहु करत तरसावै।
पापी पपीहा प्राण रहत है, कोयल सी कु कावै। सखी सावरे बिन नींद न आवै॥''

× × ×

''साजन सोवै शीश महल में, उठ के चेत करे ना। बार-बार मेरो बिछवन बाजे
बिछवन की झंकार सुने ना सुने ना। ढोलो जी जगे ना म्हारो राजा जी जगेना॥''[17]

निष्कर्षत: अलीबख्श के ख्यालों में लोक जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं है। कुशाग्र बुद्धि एवं पैनी दृष्टि के कारण अलीबख्श ने बड़े ही सुलझे व मंजे हुए ढंग से लोक जीवन के प्रत्येक तत्त्व पर प्रकाश डाल उसे सामान्य जन-मानस में प्रिय बना दिया है।

सन्दर्भ

1. डॉ. सिंह, कृष्णबीर के कथनानुसार
2. लाल, बिहारी के कथानानुसार
3. पूर्वोक्त
4. मा. गुर्जरमल
5. खटीक, धीर सिंह
6. पूर्वोक्त
7. पूर्वोक्त
8. मा. हरिराम
9. पूर्वोक्त
10. पूर्वोक्त
11. जांगिड, बाबूलाल
12. पूर्वोक्त
13. पूर्वोक्त
14. समसुद्दीन खान
15. पूर्वोक्त
16. पूर्वोक्त
17. लाल, बिहारी